जय श्री राम हरे स्वामी

जय श्री राम हरे स्वामी जय सिय राम हरे ।
भक्त जनन दुख भंजन कृपा निधान हरे ॥

क्रीट मुकुट सिर शोभित भाल तिलक सोहे ।
कमल नयन छवि सुंदर त्रिभुवन मन मोहे ॥

वाम भाग सिय शोभित आदि शक्ति माता ।
दाहिन लखन विराजत संग भरत भ्राता ॥

उर बनमाल विराजत कर धनु शर धारी ।
भक्त जनन सुखदाता जग मंगल कारी ॥

अवधपुरी प्रभु प्रकटे लीला अमित करी ।
संत जनन सुख दीन्हा धरणी भार हरी ॥

तरी अहल्या नारी पदरज छुअत हरी ।
केवट चरण पखारयो तारयो कृपा करी ॥

जनकराज प्रण राख्यो भंजेउ धनु भारी ।
क्रोध हरयो भृगुपति का प्रभु महिमा न्यारी ॥

प्रणतपाल करुणानिधि दीनन हितकारी ।
करुणासिंधु दयानिधि संतन सुखकारी ॥

बालि त्रषित सुग्रीवहिं ताहि शरण लीन्हा ।
रावण त्रषित विभीषण लंकापति कीन्हा ॥

दशरथ अजिर बिहारी भक्तन सुखकारी ।
हनुमत हृदय विहारी सेवित कामारी ॥

अवध दास प्रभु तुम्हरो भवनिधि मध्य परो ।
कृपा करो करुणानिधि चाहो तो पार करो ॥

आरति श्री सियबर की जो जन नित गावे ।
होय कृपा रघुवर की सुख सद्गति पावे ॥

By; Yogesh Tiwari

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/7282/title/jai-shri-ram-hare-swami-jai-siyan-hare

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |